4

सूतपुत्र

(डॉ. गंगासहाय 'प्रेमी')

प्रयागराज, सहारनपुर, अलीगढ़, मुजफ्फरनगर, गाजीपुर, मैनपुरी, जालौन, हरदोई, बाराबंकी।

डॉ० गंगासहाय 'प्रेमी' द्वारा लिखित नाटक 'सूत-पुत्र' महाभारत के प्रसिद्ध पात्र दानवीर कर्ण के जीवन की घटनाओं पर आधारित है। इस नाटक में पौराणिक कथा को आधार बनाकर वर्तमान भारतीय समाज की विसंगतियों—वर्ण, जाति, वर्ग एवं महिलाओं की स्थिति का विवेचन किया गया है। इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने कर्ण के प्रति पाठकों के मन में सहानुभूति उत्पन्न करने का प्रयास किया है। इस नाटक में नाटककार ने नारी की समाज में विवशता, नारी शिक्षा की समस्या आदि का चित्रण कर उसे वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समझाने का प्रयास किया है।

'सूतपुत्र' नाटक की कथावस्तु (सारांश)

डॉ. गंगासहाय 'प्रेमी' द्वारा लिखित 'सूतपुत्र' एक समस्यामूलक विचारोत्तेजक पौराणिक नाटक है, जिसका कथानक महाभारत से लिया गया है। इसका कथानक (सारांश) इस प्रकार है—

प्रथम अंक—आचार्य परशुराम सूतपुत्र 'कर्ण' के जंघे पर सिर रखकर सोये हुए हैं। उनका उत्तरीय रक्त से भीग गया है। रक्त की उष्णता से उनकी नींद टूट जाती है। वे देखते हैं कि विषैला कीड़ा कर्ण की जांघ में माँस कुतरकर भीतर प्रवेश कर गया है और कर्ण सब कुछ सहन करता हुआ उन्हें इसलिए नहीं जगा रहा है कि गुरुदेव को कष्ट होगा। वे उठकर तुरन्त आश्रम में जाते हैं और बाण लाकर कीड़े को उसकी नोक से निकाल देते हैं। वन से 'नखरंजनी' घास लाकर उसके रस को घाव पर गिराकर उसका उपचार करते हैं। इस प्रकार शिष्य पर प्रगाढ़ प्रेम होते हुए भी उसकी दृढ़ता और धैर्य को देखकर उन्हें उसके ब्राह्मण होने पर सन्देह हो जाता है और बातचीत द्वारा सारे रहस्य को खुलवा लेते हैं। उनका क्रोध जाग उठता है। वे कर्ण को शाप देते हैं कि यहाँ आश्रम में सीखी हुई विद्या उसके काम नहीं आयेगी। वह विद्या अन्तिम समय में भूल जायेगी।

इस प्रकार कर्ण 'सूर्यपुत्र' होते हुए भी 'सूतपुत्र' के असवर्णत्य का नामपट्ट लगा होने के कारण गुरु के आशीर्वाद से वंचित रह जाता है। जन्मदाता और गुरु दोनों में से किसी का भी उसे स्नेह अथवा आशीष नहीं मिल पाता।

द्वितीय अंक—नाटक के दूसरे अंक में पांचाल नरेश द्रुपद की सुन्दर कन्या द्रौपदी के स्वयंवर का दृश्य है। वहाँ शर्त रखी गई है कि जो व्यक्ति कड़ाह के खौलते हुए तेल को देखकर ऊपर चक्र में घूमती हुई मछली की बाईं आँख को वेध देगा, उसी के साथ द्रौपदी का विवाह होगा। स्वयंवर की शर्त बड़ी है। दूर-दूर के राजकुमार पहुँचे हुए हैं। कर्ण दुर्योधन के साथ वहाँ पहुँच जाता है। किन्तु यहाँ भी उसका असवर्णत्व उसके मार्ग में बाधक बन जाता है। कर्ण अपना पूरा परिचय नहीं दे पाता, अत: वह लक्ष्य-वेध से रोक दिया जाता है। कर्ण में निहित विद्रोही भावनाओं को परखकर उसी राजसभा में दुर्योधन कर्ण को अंग देश का राजा घोषित कर देता है किन्तु फिर भी उसे अज्ञात कुल-जन्मा होने के कारण स्वयंवर में भाग लेने के लिए पात्र नहीं माना जाता। अन्त में अज्ञातवास बिता रहे अर्जुन भीम के साथ ब्राह्मण वेश में स्वयंवर सभा में आते हैं और लक्ष्य-वेध कर द्रौपदी को वरण करते हैं। दुर्योधन विरोध द्वारा द्रौपदी को छीनना चाहता है किन्तु कर्ण इसे अनुचित मानता है। वह क्षोभ और कटुता लेकर स्वयंवर से वापस आता है। द्रौपदी के इस स्वयंवर की घटना से कर्ण दुर्योधन का पक्षधर और पाण्डवों का कट्टर विरोधी बन जाता है।

तृतीय अंक—नाटक के तीसरे अंक में महाभारत युद्ध से पूर्व गंगा तट पर कर्ण सूर्य की उपासना करता है। सूर्यदेव प्रकट होकर उसे अपना परिचय-सम्बन्ध सब कुछ बता देते हैं। कर्ण की रक्षा के लिए वे सोने का कुण्डल और कवच देते हैं। जिसकी विशेषता यह है कि वह शरीर से आसानी से नहीं छूट सकता। वे कर्ण को भावी आसन्न संकट से भी अवगत करा देते हैं कि इन्द्र

उसे छलने के लिए आ रहे हैं। किन्तु वह अपनी दानवीरता पर अडिग है। इन्द्र की याचना पर कवच और कुण्डल इन्द्र को दे देता है। इन्द्र प्रसन्न हो जाते हैं और अपनी ओर से 'अमोघ' अस्त्र उसकी अन्तिम रक्षा के लिए दे देते हैं। इसके बाद ही वहाँ महाभारत के भीषण युद्ध की आशंका से भयभीत कुन्ती का आगमन होता है जो स्पष्ट कर देती है कि कर्ण उसका जेष्ठ पुत्र है। वह कर्ण से अनुरोध करती है कि वह दुर्योधन का पक्ष छोड़कर पाण्डवों की ओर आ जाय और उनके राज्य का उत्तराधिकारी बने। किन्तु कुन्ती का वात्सल्य प्रेम, राज्य, प्रलोभन, मातृत्व आदि कर्ण को उसके कर्त्तव्य पथ से विचलित नहीं कर पाते। वह इसे विश्वासघात मानता है और कुन्ती को इस बात पर आश्वस्त करके वापस करता है कि 'अर्जुन' को छोड़कर वह किसी पाण्डव का अहित नहीं करेगा और अर्जुन के न रहने पर भी उसको लेकर कुन्ती के पाँच पुत्र रहेंगे।

चतुर्थ अंक–नाटक के चतुर्थ अंक में कर्ण के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालने के लिए नाटककार को तीन दृश्यों का आयोजन करना पड़ा है। प्रथम दृश्य में कुरुक्षेत्र के युद्ध का दृश्य है जिसमें कर्ण और शल्य के पारस्परिक सम्बन्ध की चर्चा है। शल्य सारथि है। वह कर्ण के अधीनस्थ काम करने में अपमान का अनुभव करता है। उधर कर्ण महारथी के पद पर आसीन है। उसकी आज्ञा का उल्लंघन और शल्य के व्यंग्य-बाणों से उसका मनोबल गिरता है। बहुत कहने के बाद शल्य रथ को अर्जुन के पास लाता है। कर्ण की वीरता का लोहा श्रीकृष्ण भी मानते हैं। दुर्भाग्य से कर्ण का रथ दलदल में फँस जाता है। शल्य नीचे नहीं उतरता। कर्ण को शस्त्र त्याग कर भूमि पर रथ का चक्का कीचड़ से निकालने के लिए उतरना पड़ता है। अर्जुन नि:शस्त्र कर्ण पर बाण-प्रहार करते हैं। कर्ण गिर पड़ता है। कौरव सेना में शोक व्याप्त हो जाता है।

दूसरे दृश्य में कर्ण के चरित्र को और भी उजागर करने के लिए श्रीकृष्ण और अर्जुन के प्रयास की चर्चा है। चौथे अंक के दूसरे दृश्य में श्रीकृष्ण और अर्जुन कर्ण की दानशीलता, धैर्य और साहस की अन्तिम परीक्षा लेने की योजना बनाते हैं।

तीसरे दृश्य में श्रीकृष्ण और अर्जुन ब्राह्मण वेश बनाकर कुरुक्षेत्र के युद्ध भूमि से आहत-मरणासन्न कर्ण की दानवीरता, धैर्य और साहस की परीक्षा लेते हैं। युद्ध भूमि में अब कर्ण लाशों के बीच मरणासन्न कराह रहा है। श्रीकृष्ण अर्जुन के साथ ब्राह्मण बनकर दान माँगने के लिए पहुँचते हैं। कर्ण अपने दाँत में लगे सोने को देना चाहता है। वह पत्थर के टुकड़े से दाँत तोड़ता है। बाण से पृथ्वी छेद कर जल निकालता है और सोने को धोकर दान दे देता है तथा श्रीकृष्ण की परीक्षा में खरा उतरता है। श्रीकृष्ण अर्जुन और कर्ण को भाई-भाई के रूप में मिला देते हैं और कर्ण हमेशा के लिए आँखें बन्द कर लेता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. 'सूत्रपुत्र' शीर्षक की सार्थकता पर विचार व्यक्त कीजिए।

प्रश्न 2. 'सूतपुत्र' नाटक का कथानक (कथावस्तु) का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 3. डॉ. गंगासहाय 'प्रेमी' ने अपने नाटक 'सूतपुत्र' में प्राचीन कथा को आधार बनाकर वर्तमान की किन ज्वलन्त समस्याओं को चित्रित किया है? संक्षिप्त उत्तर दीजिए।

प्रश्न 4. 'सूतपुत्र' नाटक की भाषा-शैली पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

प्रश्न 5. संवाद-योजना की दृष्टि से 'सूतपुत्र' नाटक की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 6. कर्ण की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

प्रश्न 7. 'सूतपुत्र' के आधार पर परशुराम की चारित्रिक विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

प्रश्न 8. 'सूतपुत्र' नाटक के आधार पर श्रीकृष्ण के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 9. कुन्ती के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 10. "कर्ण का जीवन फूलों की शैय्या नहीं, ज्वालागिरि का निवास था।" 'सूतपुत्र' नाटक के आधार पर सिद्ध कीजिए।

प्रश्न 11. नाट्य कला की दृष्टि से 'सूतपुत्र' की समीक्षा कीजिए।